होती है इसी प्रकार राघवदासजी को कुछ चाहना किसी ऐश्वर्य व संपत्ति के बटोरनेकी न थी आपसे आप द्रव्य आता था व खर्च होता था। भगवद्भक्तों की सेवा में विश्वास, सहिष्णु, प्रियदर्शन व मीठे बोलने-वाले सुन्दररूप थे। अल्हरामजी जो रावल करके बाजते थे अपने गुरु की सेवा भगवत् की सेवा के सदृश करके संसार में विख्यात हुये।

कथा हरिवंश की।

भगवत् का वचन है कि जे निष्किञ्चन मेरा भजन करते हैं उनको मैं शीघ्र मिलताहूँ इस बचन पर हरिवंशजी को दृढ़ विश्वास था। जैसे उस घसियारे ने कि उसके पास केवल खुरपा जाली था गङ्गास्नान के समय दान करदिया उसीप्रकार सब वस्तु दान करके व त्यागी होकर भगव-द्भजन में लगे और विना भगवद्भजन स्मरण के एक घड़ी व्यर्थ नहीं जाती थी जबतकरहे कोई वचन कठोर न बोले। रामानुजसंप्रदाय में श्रीरङ्गजी के चेले थे। सन्तोषी, सहिष्णु, प्रियदर्शन और श्लाघ्य थे।

सत्रहवीं निष्ठा।

भगवत्सेवा का वर्णन व महिमा जिसमें दश भक्त उपासकों की कथा हैं।

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों की ऊर्ध्वरेखा को प्रणाम करके बौद्धावतार को कि गयाजी में धारण करके प्रथम वास्ते एक प्रयोजन के यज्ञादिक की निन्दा करी और फिर सब धर्मों को स्थापित किया दण्ड-वत् है। सेवानिष्ठा की महिमा के वर्णन से पहलेही एक संदेह का निवृत्त करना प्रयोजन हुआ वह यह है कि भागवत इत्यादि पुराणों में नव प्रकार की भक्ति में से सेवा, पूजन व दासनिष्ठा को अलग अलग वर्णन किया और विचार करके प्रकट कुछ भेद नहीं जनाई देता सो कारण अलग अलग वर्णन करने शास्त्रों का क्या है सो जाने रहो कि स्वरूपसेवानिष्ठाका सम्मुख रहना अनुक्षण सेवा में अपने स्वामी के और सहि नहीं सकना विश्ले-षता एक क्षणमात्र का और करना सब सेवा जो समय समय पर करना प्रयोजन पड़े और वह सेवा मन वच कर्म से होय सो पूजननिष्ठा से तो इस सेवानिष्ठा को यह भेद हुआ कि पूजानिष्ठा उसको कहते हैं जो केवल षोडशोपचार से किया जाय जिनका वृत्तान्त आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा व अर्चानिष्ठा में विशेष करके लिखा है कुछ अनुक्षण सम्मुख प्राप्त रहने का नियम नहीं है और वियोग भी वह उपासक सहिसक्ता है और दासनिष्ठा से यह भेद है कि दासनाम किंकर का है व करना किंकरताई

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0267
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG